गुजरात चुनाव: पैरों तले जमीन खिसकती नजर आ रही मोदी को

मनोज कुमार झा

गुजरात विधानसभा चुनाव में कुछ ही दिन बचे हैं। चुनाव प्रचार की गहमागहमी अपने चरम पर पहुंच गई है। अब तक हर तिकड़म और दुष्प्रचार के सहारे चुनाव जीतने वाले मोदी और अमित शाह को पहली बार इस चुनाव में दिन में ही तारे दिखाई पड़ रहे हैं। ऐसा लगता है कि गुजरात विधानसभा चुनाव मोदी सरकार और पूरी भगवा मंडली के लिए कहीं बुरे दिनों की सौगात लेकर न आ जाए। ये बात दीगर है कि भाजपा जीतती है या हारती है। गुजरात चुनाव में हार-जीत का महत्त्व ज्यादा नहीं रह गया है। महत्व इस बात का है कि इसी से मोदी सरकार की उलटी गिनती शुरू हो जाने की पूरी संभावना बनती दिखाई पड़ रही है।

लगता है कि खुद मोदी को भी इसका अहसास हो चुका है। यही वजह है कि वे अपने ब्यानों और भाषणों से यह साबित करते जा रहे हैं कि 'विकास गांडो थये छे' यानी विकास पगला गया है। यह नारा गुजरात में मोदी विरोधियों का सबसे लोकप्रिय नारा बन गया है। गुजरात विधानसभा चुनाव में कांग्रेस बहुत ही मजबूती से उभरी है और राहुल गांधी को पप्पू कहने वालों को भी करारी चपत लगी है। मोदी की हर चाल का जवाब राहुल बहुत संयत होकर दे रहे हैं और वहां पाटीदारों की राजनीति से भी संतुलित होकर कदमताल साध रहे हैं। भले ही कांग्रेस को गुजरात में सत्ता हासिल कर पाने में सफलता मिले या नहीं, यह साफ हो चुका है कि इस चुनाव के बाद राष्ट्रीय स्तर पर भगवा का विकल्प देने की विपक्षी दलों की कवायद शुरू होगी जिसका असर 2019 के लोकसभा चुनावों में देखने को मिलेगा।

पिछले दिनों ममता बनर्जी ने ये कहा था कि मोदी विरोधी तमाम दलों को एकजुट होने की ज़रूरत है। भगवा ताकतें एकजुट हैं और सत्ता के मद में पागल हो चुकी हैं। इनसे मुकाबले के लिए तमाम विरोधी दलों का एक मंच पर आना एक बड़ी ऐतिहासिक चुनौती ही है। 2014 में सत्ता में आने के बाद से ही इनका जनविरोधी और आतंकी चेहरा खुल कर सामने आता रहा है।

बावजूद कई राज्यों में ये सत्ता में आने में सफल हुए तो इसके पीछे इनकी साजिशें ही थीं। उत्तर प्रदेश में इनका सत्ता में आना नोटबंदी का परिणाम बताया जा रहा है। जबकि इसका असल कारण सत्तारूढ़ अखिलेश सरकार की नालायकियां रहा है। पर नोटबंदी से उत्साहित होकर जब मोदी सरकार ने जीएसटी लागू कर दिया तो यही गुजरात में इनके पतन का कारण बन कर सामने आ रहा है। अब मोदी गुजरात की जनता के सामने गिड़गिड़ा रहे हैं कि उन्हें जिता दे तो वे उसकी इच्छा के अनुसार जीएसटी के नियमों में बदलाव कर देंगे। कहना न होगा कि नोटबंदी से देश की जनता को कितनी दुश्वारियां झेलनी पड़ी। पर मोदी लगातार इसे सफल बताते रहे। जीएसटी ने व्यवसायी वर्ग की कमर ही तोड़ दी।

अर्थव्यवस्था में मंदी छा गई है। नौकरियां जा रही हैं। पर फर्जी रेटिंग एजेंसियों से अनुकूल रेटिंग हासिल कर ये मतिमंद खुश हो जाते हैं, लेकिन सरज़मीं पर जब देखते हैं तो होश फाख्ता हो जाते हैं। फिर इवांका ट्रम्प इन्हें सर्टिफिकेट दे देती है तो ये मतिमंद और भी खुश हो जाते हैं, लेकिन जैसे ही अपने घर गुजरात जाते हैं और पैरों तले जमीन खिसकती दिखाई पड़ती है तो सच में पागलों जैसा व्यवहार करने लगते हैं। पिछले दिनों कांग्रेस और राहुल पर हमला करते हुए नरेंद्र मोदी ने जो बातें कही हैं, उससे साफ है कि वे संभवतः यह भूल चुके हैं कि प्रधानमंत्री के पद हैं। राहुल के मंदिरों में जाकर दर्शन करने को लेकर उन्होंने जो टिप्पणी की है, वह दिखलाता है कि उनके लिए प्रधानमंत्री पद की कोई गरिमा है ही नहीं। जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गांधी को लेकर की गई टिप्पणियों ने उन लोगों को भी दुखी कर दिया जो किसी न किसी रूप में कांग्रेस के विरोधी रहे हैं, भले ही मोदी जी के समर्थक रहे हों या नहीं। वैसे मोदी जी ने चुनाव प्रचार में कभी कोई गरिमा रखी नहीं, उन्होंने अपनी छवि एक भांड की बनाई। चीखना-चिल्लाना, मिमिक्री करना, विरोधियों पर व्यक्तिगत प्रहार करना उनकी आदत में शुमार रहा है। अनपढ़ होने के कारण किसी मुद्दे पर बात करना उनके बूते की बात है ही नहीं, पर इस देश में ऐसे नेताओं की भी कोई कमी नहीं रही जो ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, पर उनमें जनता की समस्याओं को लेकर एक अंतर्दृष्टि, एक सूझ होती थी जो अपने भाषणों में वे जाहिर करते थे। पर ये तो भांड की तरह पेश आते हैं। बहरहाल, जनता इन्हें अब तक झेलती जा रही थी, लेकिन अब गुजरात की जनता ने ही इन्हें झेलने से मानो इनकार कर दिया है।

यह जाहिर हुआ स्वयं मोदी जी और अमित शाह की सभाओं में जुटने वाली कम भीड़ से। कई जगहों पर कुर्सियां खाली ही रह गईं और जनता प्रलोभनों के बावजूद नहीं जुटी। इधर, राहुल की सभाओं में उमड़ती भीड़ देख मोदी जी ने अपना आपा खो दिया और उनके नाना नेहरू और दादी इंदिरा पर प्रहार करने लगे। वे यह भूल गए कि पंडित जवाहर लाल नेहरू का नाम बीसवीं सदी के दुनिया के पांच सबसे बड़े नेताओं में आता है। उनका नाम गांधी के साथ लिया जाता है।

दुनिया उन्हें आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में जानती है। उनकी पहचान उस नेता के रूप में है जिनके विचारों ने भारत ही नहीं,

दुनिया की राजनीति को प्रभावित किया। वे एक विश्व प्रसिद्ध लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। वहीं, इंदिरा गांधी की पहचान भी एक विश्व नेता की रही है। इनका जो कद रहा है, उसे समझ पाना मोदी जी के वश की बात नहीं है, न ही संघ के टुच्चे नेताओं के वश की। मोहन भागवत तो बलात्कारी तथाकथित संतों जैसे आसाराम आदि से मिलता रहा है और मोदी जी भी मिलते रहे हैं। चाय बेचने वाले के रूप में अपनी छवि बना कर ये कितने हास्यास्पद हो चुके हैं, ये भी समझ पाना इनके लिए संभव नहीं। मूर्खता, लम्पटता और बदमाशी का मूर्तिमान रूप हैं ये संघी, जो इवांका ट्रम्प से सर्टिफिकेट लेकर खुश हो जाते हैं, जो एक मॉडल थी और अमेरिका में भी जिसकी कोई कद्र नहीं।

जहां तक अटल और आडवाणी का सवाल है, वे सपने में भी नेहरू और इंदिरा पर इस तरह प्रहार करने के बारे में नहीं सोच सकते थे। पर मोदी एक सड़कछाप नेता हैं जो देश के दुर्भाग्य से प्रधानमंत्री जैसे पद पर पहुंच गए, लेकिन इनका पराभव और अंत सुनिश्चित है। आज चुनाव जीतने के लिए यह शख्स खुद पर फिल्में तक बनवा रहा है और नमोनमो गाने चलवा रहा है। इस तरह ये कितना हास्यास्पद होता चला जा रहा है, इसकी भी इसे परवाह नही है। बहुत से राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि गुजरात चुनाव प्रचार के दौरान नेहरू और इंदिरा पर प्रहार कर मोदी ने संभवतः अपने पैरों पर ही कुल्हाड़ी मार ली है। सच ही कहा है ङ्क 'जब नाश मनुज पर छाता है पहले विवेक मर जाता है'।

चुनाव प्रचार के दौरान विरोध किया जाता ही है, पर मुद्दे भी सामने रखे जाते हैं। मोदी कोई मुद्दा नहीं रखते, क्योंकि उनका जो मुद्दा था विकास, वह बुरी तरह पिट चुका है। कांग्रेस और पाटीदार नेताओं ने विकास के मुद्दे की हवा निकाल दी है, इससे मोदी खिसियाहट में नेहरू और इंदिरा पर प्रहार करने लगे, जिसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ेगा। दूसरी तरफ, राहुल ने गंभीरता का परिचय देते हुए मोदी और दूसरे भाजपा नेताओं पर कभी व्यक्तिगत प्रहार नहीं किया, बल्कि मुद्दों की ही बात करते रहे हैं। नेहरू और इंदिरा गांधी पर मोदी के प्रहार किए जाने से गुजरात के लोग भी नाखुश हैं। इसकी वजह ये है कि इन नेताओं से लोग पार्टीगत आधार पर नहीं, बल्कि भावनात्मक आधार पर जुड़े हैं।

गुजरात के वरिष्ठ पत्रकार प्रशांत दयाल ने बीबीसी में लिखा है कि नरेंद्र मोदी जब इस प्रकार की बात करते हैं, तब वो ये बात भूल जाते हैं कि वो देश के प्रधानमंत्री हैं और देश के दिवंगत प्रधानमंत्री के बारे में इस प्रकार की टिप्पणी कर रहे हैं।

प्रशांत दयाल ने कहा, हमारे यहां ऐसी परंपरा है कि हम दिवंगत लोगों के बारे में नकारात्मक टिप्पणी नहीं करते। फिर भी उन्होंने इंदिरा गांधी के बारे में जो टिप्पणी की है वह सच नहीं है।

प्रशांत दयाल कहते हैं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मोरबी की जिस दुर्घटना के बारे में बात कर रहे थे, उस दुर्घटना के वक्त वे गुजरात में ही थे। वो उस वक्त स्वयंसेवक थे और उन्हें ये बात अच्छी तरह से पता है कि मच्छू डैम टूटने से कई इंसानों और पशुओं की जान की तबाही हुई थी, जिसके कारण महामारी फैलने का खतरा बढ़ गया था। उस वक्त सबके लिए मुंह पर रूमाल बांधना अनिवार्य कर दिया गया था और मोरबी में चारों तरफ़ बहुत बदबू फैली हुई थी। इस स्थिति में देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपने मोरबी दौरे के दौरान अपने मुंह पर अगर रूमाल रखा तो ये बिल्कुल सामान्य बात थी। प्रशांत दयाल ने कहा, नरेंद्र मोदी इस बात को राजनैतिक फ़ायदे के लिए जिस तरीके से बता रहे हैं, उससे राजनीति का स्तर नीचा हो रहा है। इससे पहले भाजपा और कांग्रेस के किसी भी नेता ने इतने निम्न स्तर की राजनीति गुजरात में नहीं की है।

इसी तरह, सोमनाथ मंदिर में राहुल के दर्शन के लिए जाने को लेकर मोदी की टिप्पणी बहुत ही आपत्तिजनक रही, जिसका बहुत विरोध हुआ। दरअसल, मोदी ने इसे उभार कर और यह कह कर कि नेहरू सोमनाथ के पुनरुद्धार के लिए सहमत नहीं थे और यह काम पटेल ने किया, मतदाताओं को धार्मिक आधार पर गोलबंद करने की कोशिश की जो संघियों की फितरत रही है, दूसरे राहुल किस धर्म के मानने वाले हैं, यह विवाद छेड़ कर भी कुटिल मनोवृत्ति का परिचय दिया है। जो भी हो, पतन के जिस गर्त में मोदी जी गिरते जा रहे हैं, उसके बाद देश में एक नई राजनीति की शुरुआत की उम्मीदें प्रबल होंगी।

आदरणीय मोदी जी .....

पेज चार का शेष

विज्ञान-तकनीक) की पढ़ाई हिंदी में नहीं हो सकती. जब चीन की मंदारिन (चीनी) जैसी कठिन भाषा में ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीक की पढ़ाई हो सकती है तो हिंदी में क्यों नहीं हो सकती? हिंदी विश्व की सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान पर है. इसके पास देवनागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि है जिसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है. यह अत्यंत सहज और सरल भाषा है, किन्तु इसको माध्यम के रूप में न अपनाने के कारण देश की प्रतिभाओं का गला घोंटा जाता है.

'इंडियन एक्सप्रेस' की उक्त रपट में अंग्रेजी माध्यम लागू करने के कारणों के बारे में भी विस्तार से बताया गया है और कहा गया है कि यह निर्णय अभिभावकों की मांग पर लिया गया है. अभिभावक अपने बच्चों को कारपोरेशन के स्कूलों की जगह अंग्रेजी माध्यम वाले प्राइवेट स्कूलों मे प्रवेश दिलाना पसंद कर रहे हैं. इस तरह कारपोरेशन के स्कूलों में छात्र-संख्या घट रही है. इस तरह तो देश भर के सभी सरकारी स्कूलों को अंग्रेजी माध्यम में बदलना पड़ेगा. क्या आप की यही योजना है ? महोदय, जब आप चपरासी तक की नौकरियों में भी अंग्रेजी अनिवार्य करेंगे तो अंग्रेजी की मांग बढ़ेगी ही. यह एक ऐसा मुल्क बन चुका है जहां का नागरिक चाहे देश की सभी भाषाओं में निष्णात हो किन्तु एक विदेशी भाषा अंग्रेजी न जानता हो तो उसे इस देश में कोई नौकरी नहीं मिल सकती और चाहे वह इस देश की कोई भी भाषा न जानता हो और सिर्फ एक विदेशी भाषा अंग्रेजी जानता हो तो उसे इस देश की छोटी से लेकर बड़ी तक सभी नौकरियाँ मिल जाएंगी. छोटे से छोटे पदों से लेकर यू.पी.एस.सी. तक की सभी भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी का दबदबा है. उच्चतम न्यायालय से लेकर सभी उच्च न्यायालयों में सारी बहसें और फैसले सिर्फ अंग्रेजी में होने का प्रावधान है. यह ऐसा तथाकथित आजाद मुल्क है जहां के नागरिक को अपने बारे में मिले फैसले को समझने के लिए भी वकील के पास जाना पड़ता है और उसके लिए भी वकील को पैसे देना पड़ता है. मुकदमों के दौरान उसे पता ही नही होता कि वकील और जज उसके बारे में क्या सवाल-जबाब कर रहे हैं. ऐसे माहौल में कोई अपने बच्चे को अंग्रेजी न पढ़ाने की मूर्खता कैसे कर सकता है ?

आप जिस अमेरिका और इंग्लैंड की अंग्रेजी हमारे बच्चों पर लाद रहे हैं उसी अमेरिका और इंग्लैण्ड में पढ़ाई के लिए जाने वाले हर सख्स को आइइएलटीएस (इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम) अथवा टॉफेल (टेस्ट आफ इंग्लिश एज फॉरेन लैंग्वेज) जैसी परीक्षाएं पास करनी अनिवार्य हैं. दूसरी ओर, हमारे देश के अधिकाँश अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में बच्चों को अपने देश की राजभाषा हिन्दी या मातृभाषा बोलने पर दंडित किया जाता है और आप की सरकार कुछ नहीं बोलती. यह गुलामी नहीं तो क्या है? बेशक गोरों की नहीं, काले अंग्रेजों की गुलामी. गुलाम व्यक्ति ही सोचता है कि मालिक भाषा बोलेंगे तो फायदे में रहेंगे. महोदय, आप तो चुनौती-भरा और कठोर निर्णय लेने के लिए विख्यात हैं. अंग्रेजी की अनिवार्यता हटाइए सरकारी नौकरियों से, न्यायपालिका और कार्यपालिका से और देखिए, रातो रात अंग्रेजी की जगह मातृभाषाओं के माध्यम से पढ़ने वालों की मांग बढ़ जाएगी. फिर आप को प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक समूची शिक्षा व्यवस्था मातृभाषाओं के माध्यम से लागू करना पड़ेगा और आप देखेंगे कि इस देश की प्रतिभाएं फिर से दुनिया में अपनी कीर्ति- पताका फहराएंगी. इतिहास में आप का भी नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा.

- डॉक्टर अमरनाथ

मैं जानता हूँ आपको बहुत बुरा लगता है

जब कोई आपसे कहता है कि इस देश में रहने वाला कोई भारत माता की जय नहीं बोलना चाहता। मानता हूँ कि आपका खून खौल जाता है।

मैं भी पूरी जवानी भारत माता की जय के नारे लगाता रहा

आज भी लगा सकता हूँ उसमें कोई बुराई नहीं है। लेकिन अब नहीं लगाता। मैं अब जान बूझ कर भारत माता की जय बोलने से मना करता हूँ।

क्यों करूँगा मैं ऐसा ?
यह मत कहना कि मैं कम्युनिस्ट हूँ
या मैं विदेशी पैसा खाता हूँ
या मैं नक्सलवादी हूँ

या मैं मुसलमानों के तलवे चाटता हूँ।

मेरा जन्म एक सवर्ण हिंदू परिवार में हुआ। मुझे भी बताया गया कि हिंदू धर्म दुनिया का सबसे महान धर्म है। मुझे भी बताया गया कि हमारी जाति बहुत ऊंची है। मुझे भी बताया गया कि देश की एक खास राजनैतिक पार्टी बिलकुल सही है।

मैं भी सैनिकों की बहादुरी वाली फ़िल्में देखता था और तालियाँ बजाता था। मैं भी पाकिस्तान से नफ़रत करता था।

लेकिन फिर मुझे आदिवासी इलाके में जाकर रहने का मौका मिला। मैंने वहाँ जाकर अनुभव किया कि मेरी धारणाएं काफी अधूरी हैं।

मैंने दलितों की जली हुई बस्तियों का दौरा किया और मुझे समझ में आया कि मेरे धर्म में बहुत सारी गलत बातें हैं।

धीरे धीरे मैंने ध्यान दिया कि सभी धर्मों में गलत बातें हैं

लेकिन कोई भी धर्म वाला उन गलत बातों को स्वीकार करने और सुधारने के लिए तैयार नहीं है।

इस तरह मुझे धर्म की कट्टरता समझ में आयी। इसके बाद मैंने अपनी कट्टरता छोड़ने का फैसला किया। मैंने यह भी फैसला किया कि अब मैं किसी भी धर्म को अपना नहीं मानूंगा क्योंकि सभी धर्म एक जैसी मूर्खता और कट्टरता से भरे हुए हैं।

आदिवासियों के बीच रहते हुए मैंने पुलिस की ज्यादतियां देखीं। मैंने उन् आदिवासी लड़कियों की मदद करी जिनके साथ पुलिस वालों और सुरक्षा बलों के जवानों नें सामूहिक बलात्कार किये थे। मैंने उन माओं को अपने घर में पनाह दी जिनके बेटों और पति को सुरक्षा बलों नें मार डाला था

ताकि उनकी ज़मीनों को उद्योगपतियों को दिया जा सके।

मैंने आदिवासियों के उन गाँव में रातें गुजारीं जिन गाँव को सुरक्षा बलों नें जला दिया था। उन् जले हुए घरों में बैठ करे मैंने खुद से सवाल पूछे कि आखिर इन निर्दोष आदिवासियों के मकान क्यों जलाये गए? घर जलने से किसका फायदा होगा? घर जलाने वाला कौन है?

वहाँ मुझे समझ में आया
कि हम जो शहरों में मजे से बैठ कर
बिजली जलाते हैं,

शॉपिंग मॉल में कार में बैठ कर जाते हैं,

हम जो बारह सौ रूपये का पीज़ा खाते हैं,

वह सब ऐशो आराम तभी संभव है

जब इन आदिवासियों की ज़मीनों पर उद्योगपतियों का कब्ज़ा हो।

उद्योग लगेंगे तो हम शहरी पढ़े लिखे लोगों को नौकरी मिलेगी। हमारे विकास के लिए इन आदिवासियों की ज़मीनों पर कब्ज़ तो पुलिस और सुरक्षा बलों के जवान ही करेंगे। आदिवासी अपनी ज़मीन नहीं छोडना चाहता इसलिए हमारे सिपाही आदिवासी का घर जलाते हैं।

हम शहरी लोग इसीलिये इन सिपाहियों के गुण गाते हैं,

इसीलिये आदिवासी मरता है या उसके साथ बलात्कार होता है या उसका घर जलता है तो हमें बिलकुल भी बुरा नहीं लगता। लेकिन सिपाही के साथ कुछ भी होने पर

हम गाली गलौज करने लगते हैं।

आदिवासियों के जले हुए गाँव में बैठ कर मुझे भारतीय मिडिल क्लास की पूरी राजनीति समझ में आ गई।

मुझे राजनीति विज्ञान भारतीय लोकतंत्र और न्याय व्यवस्था के अध्यन के लिए किसी विश्वविद्यालय में नहीं जाना पड़ा।

वो मैंने खुद अनुभव से सीखा।

मुझे कश्मीरी दोस्तों से भी मिलने का मौका मिला।

मैंने उनके परिवार के साथ भारतीय सेना और अर्ध सैनिक बलों के जुल्मों के बारे में जाना। चूंकि तब तक मैं समझ चुका था कि सरकारी फौजें किस तरह से जुल्म करती हैं,

इसलिए कश्मीरी जनता पर भारतीय सिपाहियों के जुल्मों को मैं साफ़ दिल से समझ पाया।

कश्मीर में सेना नें घरों से जिन नौजवानों को उठा कर मार डाला था, मैं उन बच्चों की माओं से मिला। जिन पुरुषों को सेना नें घरों से उठा लिया और कई सालों तक जिनका फिर कुछ पता नहीं चला उनकी पत्नियों से मिला।

उन औरतों को कश्मीर में हाफ विडो कहा जाता है

यानी आधी विधवा। मैंने उन महिलाओं के बारे में भी जाना जिनके साथ हमारी सेना के सैनिकों नें बलात्कार किये।

मैंने मुज़फ्फर नगर दंगों के बाद वहाँ रह कर काम किया।

वहाँ एक फर्जी प्रचार के बाद दंगे कराए।

मैंने उस फर्जी प्रचार की पूरी सच्चाई की खोज करी,

दंगा अमित शाह ने करवाया था। इन दंगों में एक लाख गरीब मुसलमान बेघर हो गए थे। सर्दी में उन्हें खुले में तम्बुओं में रहना पड़ रहा था। वहाँ ठण्ड से साठ से भी ज्यादा बच्चों की मौत हो गयी थी।

इस तरह मैंने देखा कि लव जिहाद के नाम पर

भाजपा नें हिदुओं में असुरक्षा की भावना भड़काई

और उत्तर प्रदेश में भाजपा के लिए सीटें जीतीं।

मेरी बेचैनी बढ़ती गयी। मुझे लगने लगा कि हम शहरी लोग इतने स्वार्थी कैसे हो सकते हैं कि हमारे फायदे के लिए करोड़ों आदिवासियों पर जुल्म किये जाएँ। हम इतने स्वार्थी कैसे हो सकते हैं कि दलितों की बस्तियां जलाई जाएँ और हम क्रिकेट देखते रहें। कश्मीर में हमारी सेना जुल्म करे और हम उसका समर्थन करें।

तभी भाजपा का शासन आ गया। मैंने देखा कि अब दलितों पर अत्याचार करने वाले और भी ताकतवर हो गए हैं। कश्मीर के ऊपर आवाज़ उठाने के कारण दलित विद्यार्थियों को हास्टल से निकाला जा रहा है। इसके बाद इन्हीं छात्रों में से एक छात्र रोहित वेमुला ने आत्महत्या कर ली। मुझे लगा यह आत्म हत्या नहीं एक तरह की हत्या ही है।

साथ साथ सोनी सोरी नाम की आदिवासी महिला के ऊपर सरकार के अत्याचार बढते जा रहे थे। मैं बेचैन था कि आखिर इन मुद्दों पर कोई ध्यान क्यों नहीं देता। तभी सरकार में बैठे लोगों नें भारत माता का शगूफा छोड़ दिया।

मुझे लगा कि भारत माता की जय बोलना तो कोई मुद्दा है ही नहीं, यह तो असली समस्याओं से ध्यान भटकाने के लिए सरकारी चालाकी है। मैंने निश्चय किया कि मैं भारत माता की जय नहीं बोलूँगा।

जैसे मैं अब किसी भगवान की पूजा नहीं करता लेकिन इंसानों के भले के लिए काम करने की कोशिश करता हूँ।

इसी तरह मैं भाजपा के कहने से भारत माता की जय बिलकुल नहीं कहूँगा, अलबत्ता मैं देश के लोगों की सेवा पहले की तरह करता रहूँगा।

इस समय भारत माता की जय को लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है,

और मैंने बेवकूफ बनने से इनकार कर दिया है।

- हिमांशु कुमार